राजनीतिविज्ञान प्रतिष्ठा

कार्ल मार्क्स

मार्क्स का द्वंद्ववाद पद्धति -

मार्क्स ने अपनी द्वंद्वात्मक पद्धति हीगल से ली परंतु उसने इसमें आधारभूत परिवर्तन किए। हीगल ने अपनी द्वंद्वात्मक पद्धति का प्रयोग विचारों के क्षेत्र में किया जबकि मार्क्स ने द्वंद्वात्मक का प्रयोग जीवन की भौतिक अवस्था की व्याख्या करने के लिए किया। ऐसा करते समय एक ओर तो हीगल के द्वंद्वात्मक आदर्शवाद (Dialectical Idealism) के दर्शन का प्रत्याख्यान किया तथा दूसरी ओर यंत्रवादी भौतिकवाद (mechanistic materialism) के सिद्धांत की आलोचना की। इस प्रकार समाज और इतिहास के मार्क्सवादी सिद्धांत को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism) कहा जा सकता है (वास्तव में एंगेल्स ने अपनी रचना एंटी-डूहिंग (Anti Duhring) में भौतिक प्रकृति पर भी द्वंद्ववाद का प्रयोग किया। यह बात मार्क्स के बाद के मार्क्सवादियों में अत्यंत वाद-विवाद का विषय बन गई) एंगेल्स द्वारा विकसीत मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

के तीन आयाम है।

(i) मात्रा का गुणवत्ता में परिवर्तित करने का नियम। इसका अभिप्राय यह है कि मात्रात्मक परिवर्तनों का परिणाम गुणात्मक क्रांतिकारी स्थिति होता है।

(ii) विरोधों की एकता (परस्पर विरोध का नियम और

(iii) निषेध के निषेध (पक्ष-प्रतिपक्ष-और संश्लेषण का नियम।

मार्क्स के विचार में भौतिक द्रव्य (The material) और (Ideal) आदर्श न केवल परस्पर भिन्न है बल्कि परस्पर विरोधी भी है और उनमें एकता है जिसमें भौतिकता प्रधान और मन (विचार) गौण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि द्रव्य (वस्तु) का अस्तित्व बिना मन के भी हो सकता है लेकिन द्रव्य (वस्तु) के बिना मन का अस्तित्व नहीं हो सकता। इसका कारण यह कि ऐतिहासिक दृष्टि से इस (मन) का विकास द्रव्य से हुआ। इस प्रकार मार्क्स ने हेगेल मत की स्थिति को दूसरी तरह से उलट दिया। आपको स्मरण होगा कि हेगेल के अनुसार मन प्रधान और और द्रव्य गौण है। मार्क्स ने संकेत किया कि हेगेल का द्वंद्वाद सिर के बल खड़ा है।